विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–९०

मिथिला आ मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास

भाग–४ • टोम XI

विस्तृत साहिस्यिक आलोचना आ पुनर्मूल्यांकन

XC

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · साहित्यिक आलोचना-शृंखला

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-९० · XC

मिथिला आ मैथिली साहित्यक
समानान्तर इतिहास

भाग-४ · टोम XI

साहित्यिक इतिहास, नाटय, कविता, कथा, लोकस्मृति आ प्रमाण-विवेकक
आलोचनात्मक पुनर्पाठ

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–९० · XC

A Parallel History of

Mithilā & Maithilī Literature

PART IV · TOME XI

मूल मैथिलीसँ लेखकक अंग्रेजी अनुवाद पर समेकित साहित्यिक अध्ययन

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२७

प्रकाशन-विवरण

ग्रन्थ-शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड–९० · XC

समीक्षाधीन ग्रन्थ : A Parallel History of Mithilā & Maithilī Literature — Part IV · Tome XI

ग्रन्थक उपशीर्षक : with Critical Appreciations of Representative Maithili Writers

मूल आलोचनात्मक अध्ययन आ अंग्रेजी अनुवाद : गजेन्द्र ठाकुर

एहि खण्डक सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

प्रकाशकीय संस्था : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

आधार-पाठक प्रकाशन-घोषणा : First edition 2027 (दस्तावेजमे अंकित)

सम्पादकीय संस्करण : विदेह, २०२७

© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur

पुस्तक-विन्यास : ६ × ९ इञ्च; देवनागरी युनिकोड

समीक्षाक आधार आ सीमा

प्रस्तुत खण्डक समीक्षाधीन ग्रन्थ गजेन्द्र ठाकुरक ‘A Parallel History of Mithilā & Maithilī Literature’ क Part IV · Tome XI थिक। उपलब्ध अंग्रेजी दस्तावेजमे एक दिस प्राचीन नाट्य-पाठक रंगपरम्परा, दोसर दिस आधुनिक मैथिली कविता, उपन्यास, कथा, एकांकी, पटकथा, लोकइतिहास आ समीक्षात्मक गद्यक विस्तृत अध्ययन अछि। ग्रन्थ स्वयंकेँ मूल मैथिलीसँ लेखकक अंग्रेजी अनुवाद कहैत अछि। एहि सम्पादकीय पुनर्पाठमे मूल रचनाकार, गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनात्मक विवेचन आ प्रस्तुत समीक्षाक निर्णय—एहि तीन स्तरकेँ एक-दोसरासँ अलग राखल गेल अछि।

दस्तावेजक मुद्रित पृष्ठ-विन्यास दीर्घ अछि; एकर आरम्भिक भागमे विस्तृत विषय-सूची, स्रोतक मर्यादा आ अनेक अध्ययनक पृथक शीर्षक भेटैत अछि। समीक्षा एहि उपलब्ध पाठक संरचना, चुनल महत्त्वपूर्ण विवेचन, आ अन्तर्गत

घोषित शोध-पद्धतिक परीक्षण करैत अछि। समस्त उद्धृत प्राथमिक पुस्तक, मंचन-अभिलेख, ऐतिहासिक दावा आ विधिक दस्तावेजक स्वतन्त्र प्रमाण-जाँच एहि खण्डमे सम्पन्न भेल अछि—एहन दाबी नहि कएल जा रहल अछि। जतए ग्रन्थ स्वयं स्रोतक सीमा स्वीकार करैत अछि, ओ सीमा एहि निर्णयक भाग बनैत अछि।

समीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न ई अछि जे 'समानान्तर' इतिहासक अर्थ की केवल अपेक्षाकृत उपेक्षित लेखकक नामक संग्रह अछि, अथवा साहित्यिक मूल्यांकनक एहन पद्धति, जाहिमे सामाजिक आवाज, रचनात्मक रूप, भाषिक प्रयोग, प्रमाण आ आलोचकक अपन पक्षधरता सभक जाँच सम्भव होइ। एतए उपलब्धि आ आपत्ति दुनूकेँ ग्रन्थक वास्तविक उदाहरणसँ जाँचल गेल अछि।

विस्तृत विभाग-क्रम

प्रथम विभाग : परिकल्पना, आकार आ प्रमाण-विवेक

द्वितीय विभाग : प्राचीन नाट्यपरम्परा आ तुलनात्मक रंगपाठ

तृतीय विभाग : आधुनिक आख्यान, विज्ञान आ नगर-अनुभव

चतुर्थ विभाग : कैलाश कुमार मिश्र : लोकइतिहास सँ स्त्री-अनुभव धरि

पंचम विभाग : राजदेव मण्डल : नदी, जाति, श्रम आ दृश्यरचना

षष्ठ विभाग : कविता, अनुवाद, एकांकी आ सामाजिक हस्तक्षेप

सप्तम विभाग : लल्लन प्रसाद ठाकुर, प्रभास कुमार चौधरी आ 'BHARAT 2027'

अष्टम विभाग : समेकित आलोचना, सम्पादकीय सीमा आ निर्णय

सन्दर्भ-विवरण

प्रथम विभाग : परिकल्पना, आकार आ प्रमाण-विवेक

१. ‘समानान्तर’ शब्द : वैकल्पिक सूची नहि, वैकल्पिक प्रश्न

साहित्यक इतिहास बहुधा किछु प्रतिनिधि नाम, पुरस्कार, स्थापित विधा आ केन्द्र-निर्धारित कालक्रमक सहारे लिखल जाइत अछि। एहि ग्रन्थमे ‘समानान्तर’क सार्थकता तखन उभरैत अछि जखन आलोचना छोट-नगर, गाम, लोकस्मृति, अनूदित कविता, पटकथा, स्त्रीक श्रम आ सामाजिक कलंकक भाषा सेहो इतिहासक अध्ययनयोग्य सामग्री मानैत अछि। ई चयन स्वयंमे एक महत्त्वपूर्ण साहित्येतिहासात्मक हस्तक्षेप अछि। तथापि उपेक्षित पाठकेँ स्थान देब आ ओकर कलात्मक उपलब्धि सिद्ध करब दू अलग काज थिक। लेखकक सहानुभूति जँ मूल्यांकनक एकमात्र कसौटी बनि जाए तँ वैकल्पिक इतिहास पुनः एक नब प्रशस्ति-सूची बनि सकैत अछि।

ग्रन्थक श्रेष्ठ अंश ओ छथि जतए सामाजिक विषयक प्रशंसाक बाद पाठक बनावटपर प्रश्न उठैत अछि : कोन पात्र कतेक स्वतन्त्र अछि, कोन दृश्य अनिवार्य अछि, कोन संवाद केवल तर्कक पुनरावृत्ति, कोन गीत कथाक समय बदलैत अछि, आ कोन ऐतिहासिक कथन अतिरिक्त प्रमाण माँगैत अछि। एहि कसौटीक नियमित प्रयोगसँ समानान्तर इतिहास केवल ‘किनकर चर्चा भेल’ सँ आगाँ बढ़ि ‘कोना पढ़ल गेल’क इतिहास बनैत अछि।

२. बहुविधात्मक विन्यास आ पाठकक रास्ता

पुस्तकक आरम्भ ‘Dhūrtasamāgama’ आ ‘Prabhāvatīharaṇa’ सन नाटयअध्ययनसँ होइत अछि; पछाति ‘Agnivaṃśa’ आ ‘The City's Other Face’ सन आधुनिक आख्यान, विभिन्न ‘Nit Naval’ लेखक-अध्ययन, कविता-पटकथा, लल्लन प्रसाद ठाकुरक बहुविध लेखन, प्रभास कुमार चौधरीक कथा-जगत आ ‘BHARAT 2027’क विश्लेषण धरि पहुँचैत अछि। एहि क्रममे साहित्यक दीर्घ काल, भिन्न भूगोल आ कई सामाजिक अनुभव एकहि ग्रन्थक भीतर उपस्थित होइत अछि। ओकर विस्तार शक्ति सेहो अछि आ सम्पादकीय चुनौती सेहो।

‘Nit Naval’क अधीन लेखक-विशेष सामग्रीक समूह उपयोगी पहिचान बनबैत अछि, मुदा दीर्घ सूचीक भीतर सन्दर्भक सम्बन्ध पाठकक अपन प्रयत्नपर बहुत छोड़ि देल जाए तँ तुलनात्मक तर्क शिथिल पड़ैत अछि। प्रत्येक बड़का खण्डक पहिने छोट सम्पादकीय भूमिका, ग्रन्थ-अन्तर्गत परस्पर सन्दर्भ आ सुसंगत नामानुक्रमणिका जोड़लासँ ई विशाल सामग्री अधिक खोजयोग्य भऽ सकैत अछि।

३. मूल रचना, समीक्षा आ समीक्षा-पुनर्पाठ

‘Agnivaṃśa’क सम्बन्धमे तकनीकी शासन आ प्रमाणक प्रश्न ग्रन्थकारक विवेचनमे उठैत अछि; ‘Pañcaitī’क सम्बन्धमे जाति-पंचायत आ स्त्रीक निर्णयाधिकार; ‘Bookmania’मे एक आलोचक द्वारा दोसर पुस्तकसभक पाठ। एहि तीन उदाहरणमे वस्तु अलग थिक, मुदा पाठ-स्तरक समस्या समान : पात्रक वचन, मूल लेखकक दृष्टि, प्रथम आलोचकक निष्कर्ष आ सम्पादकीय समीक्षकक निर्णय एकहि तथ्य नहि छथि।

प्रस्तुत खण्ड एहि स्तरक अन्तर बनौने रखैत अछि। उदाहरणार्थ कोनो कथा सामाजिक अन्यायक विरोध करैत अछि, एहि कारण मात्र ओकर कथानक-संयोजन निर्दोष नहि कहल जा सकैत; तहिना मूल ग्रन्थमे उद्धृत ऐतिहासिक तथ्य उपलब्ध अछि, एहि कारण ओकर स्वतन्त्र सत्यापन स्वतः सिद्ध नहि। आलोचना एकरे लेल महत्त्वपूर्ण अछि जे ओकरा अपन प्रमाणक सीमा पहिचानब होइ।

४. उद्धरण, अनुवाद आ प्रमाण-श्रेणीक समस्या

अंग्रेजी संस्करणमे संस्कृत-मैथिली नाट्यगीत, स्थानिक शब्द, लोकपद, नाम आ सांस्कृतिक पदावलीक लिप्यन्तरण अनेक ठाम प्रयुक्त अछि। अनुवाद पढ़ैत पाठक कथ्यक अर्थ पबैत छथि, मुदा गीतक मात्रा, तुक, ध्वनि आ मूल भाषा-रजिस्टरक सम्पूर्ण प्रभाव अनिवार्यतः नहि पबैत छथि। ऐतिहासिक नाटकक पाठ-साक्ष्य, आधुनिक पाठक सारांश आ सैद्धान्तिक तुलना एक वर्गक प्रमाण नहि; एकर पृथक पहचान उपयोगी अछि।

ग्रन्थक कतेको अध्ययन ‘source basis’, ‘limits of evidence’, ‘textual status’ जकाँ स्पष्ट शीर्षक दैत अछि। ई पद्धति प्रशंसनीय अछि। मुदा दीर्घ संकलनमे प्रत्येक निर्णयक समीप प्राथमिक पाठ, अनुवादित उद्धरण, आलोचनात्मक अनुमान आ बाहरी इतिहास-स्रोतकेँ अलग संकेतसँ चिन्हित कएल जाए तँ बादक शोधकर्ता आ अनुवादक लेल ग्रन्थक उपयोगिता बढ़त।

द्वितीय विभाग : प्राचीन नाट्यपरम्परा आ तुलनात्मक रंगपाठ

५. ‘Dhūrtasamāgama’ : मूल प्रहसन आ आधुनिक प्रस्तुति

‘Dhūrtasamāgama’क अध्ययने ग्रन्थ मूल प्रहसनक बहुभाषिक संसार आ ओकर आधुनिक प्रस्तुति-पाठक जीवनकेँ अलग करैत अछि। गुरु, शिष्य आ न्यायाधीशक नैतिक आवरणक पाछाँ स्वार्थक संघर्ष, तथा आनङ्गसेनाक अस्वीकारक महत्त्व, केवल हास्यक विवरण नहि; सत्ता आ देहपर अधिकारक राजनीतिक भाषा अछि। ‘पहिल मैथिली नाटक’ सन पदवीक उपयोगक सीमा चिन्हबो एहि अध्ययनक सावधानीक परिचायक अछि।

मुदा नाटकक लिखित पाठ आ मंचनक प्रभाव एक समान प्रमाण नहि। चरित्रक वेश, ठहराव, देहभाषा आ दर्शकक प्रतिक्रिया बिना अभिनय-अभिलेखक निश्चित व्याख्या पाबि नहि सकैत। अध्ययन स्वयं सभ प्रस्तुति-अभिलेख उपलब्ध नहि होबाक सीमा स्वीकार करैत अछि; एहि कारण रंगप्रयोगक सम्भावना आ ऐतिहासिक मंचनक सिद्ध तथ्य स्पष्ट रूपेँ फराक राखब उचित अछि।

६. ‘Prabhāvatīharaṇa’ : गीत, मंच आ नायिकाक इच्छा

‘Prabhāvatīharaṇa’क तीन अङ्कक अध्ययनमे प्रेमक कथा, देव-राजनीति, स्त्री-दूतक हस्तक्षेप, वेश बदलबाक क्रिया आ अन्तिम राजसत्ताक मेल समवर्ती चलैत अछि। हंसीक मध्यस्थ भूमिका कथा-कारणक महत्त्वपूर्ण केन्द्र अछि। गीतक सूची, संस्कृत पद, पात्र-प्रवेश आ रामायणक ‘नाटकक भीतर नाटक’ संरचना दर्शबैत अछि जे गेय नाटककेँ केवल कथासारसँ नहि पढ़ल जा सकैत।

एहि विश्लेषणक परीक्षा तखन अधिक दृढ होइत अछि जखन प्रभवतीक इच्छा आ ओकर राजनीतिक उपयोगक बीच दूरी राखल जाए। प्रेमक सफल परिणति अनिवार्यतः स्त्रीक निर्बाध निर्णयाधिकार नहि सिद्ध करैत; राजकीय विजय अनिवार्यतः सार्वजनिक न्याय नहि। ग्रन्थ ई प्रश्न उठबैत अछि, मुदा गीतक मूल ध्वनि आ प्रस्तुति-पद्धतिक अधिक प्रत्यक्ष तुलना पाठकक अनुमानकेँ आरो कस सकैत छल।

७. दू नाटकक तुलना : भिन्न नैतिक भूगोल

'Dhūrtasamāgama and Prabhāvatīharaṇa' नामक तुलनात्मक अध्ययन एक प्रहसनक सड़क, भिक्षा आ न्यायालयकेँ दोसरक सरोवर, राजमहल आ युद्धसँ तुलना करैत अछि। पहिलमे छल-प्रकटीकरण, दोसरमे प्रेम, भेष आ राज्य-रणनीति नाटचगत शक्ति बनैत अछि। ई तुलना 'प्राचीन बनाम आधुनिक'क सरल विभाजनसँ बाँचैत अछि; नाटकक अलग संरचनात्मक लक्ष्यकेँ प्राथमिकता दैत अछि।

तथापि स्त्री पात्रक सामर्थ्य अथवा धार्मिक सत्ता पर व्यंग्यक समान शीर्षक लगादेने सँ ओकर ऐतिहासिक कार्य एक समान नहि भऽ जाइत। एकर लेल दृश्य-संरचना, वक्ताक स्थितिक अनुवाद आ सम्बन्धित भाषिक परम्पराक भेद सतत देखबाक आवश्यकता अछि। एहि सावधानीसँ तुलनात्मक आलोचना समता-असमानताक सूची नहि, कथ्य आ रूपक बीच तर्कपूर्ण संवाद बनैत अछि।

८. पाठसम्पादनक सीमारेखा : प्रतिलिपि, गीत-सूची आ रूपान्तरण

पुरान नाटचसाहित्यमे लिपि-परिवर्तन, छन्दक पाठान्तर, गेय पदक अनुक्रम आ मंच-संकेतक सम्पादकीय जोड़ विशेष महत्त्व रखैत अछि। 'Prabhāvatīharaṇa'क विस्तृत गीत-सूची आ पाठालोचनात्मक परिशिष्ट केवल सामग्रीक बढ़ोतरी नहि; ओ ई प्रश्न उठबैत अछि जे आलोचकक वाक्य कोन संस्करणपर आधारित अछि। 'Dhūrtasamāgama'मे मूल प्रहसन आ आधुनिक रूपान्तरणक अन्तर सेहो एही तर्ककेँ दृढ करैत अछि।

भविष्यक संस्करणमे चुनल पदक समानान्तर मूल लिपि, वैज्ञानिक लिप्यन्तरण आ अंग्रेजी/मैथिली व्याख्या संग देल जाए तँ रंग-शोध आ पाठ-संशोधनक

सम्बन्ध अधिक प्रत्यक्ष बनत। अखिल प्रदर्शन-इतिहास बिना 'प्रस्तुतियोग्य'क मूल्यांकन सम्भव अछि; 'ऐतिहासिक रूपेँ एहन मंचित भेल'क निर्णय लेल स्वतंत्र प्रमाण चाही।

तृतीय विभाग : आधुनिक आख्यान, विज्ञान आ नगर-अनुभव

९. 'Agnivaṃśa' : तकनीकक शक्ति आ सार्वजनिक सुनबाइ

'Agnivaṃśa'क समालोचना ऊर्जा, जल-शुद्धि, कक्षा-प्रौद्योगिकी, सूचना-प्रबन्धन आ आम लोकक आजीविकाकेँ एकहि नैतिक क्षेत्रमे पढ़ैत अछि। सात रक्षात्मक व्यवस्थाक मुकाबिल विभिन्न गवाहीक अधिकार उभारल गेल अछि। 'स्रोत सही अछि' आ 'ओहि स्रोतक अर्थ सही अछि'—एहि बीच अन्तर ग्रन्थक केन्द्रीय तर्क बनैत अछि। बीमारक निदान, खेतक पानी, बीज आ अभिलेखक उपस्थिति तकनीकी कल्पनाकेँ मानवीय परिणामसँ जोड़ैत अछि।

समीक्षा एक समस्या सेहो चिन्हैत अछि : बहु पात्र जँ सदिखन एके प्रमाण-विवेकी, सावधान, तर्कसंगत भाषा बोलय लागथि तँ बहुस्वरता कमजोर पड़ि सकैत अछि। ई उपन्यासक विषय-वस्तुपर नहि, ओकर संवाद-रचनापर आलोचना अछि। पात्रक सामाजिक अनुभव, गलतफहमी, स्वार्थ आ बोलचालक असंगति जीवन्त रहत तखने तकनीकी नैतिकता प्रभावी कथा बनत।

१०. बहत्तर अध्यायक पाठ-मानचित्र : उपयोग आ जोखिम

'Agnivaṃśa'क परिशिष्टमे बहत्तर अध्यायक अनुक्रमिक पठन-दिशा देल गेल अछि—बीज, अग्नि, विघटन, उद्घाटन, परीक्षा आ नव आरम्भ सन खण्डगत गति केन्द्रीय अर्थ बनबैत अछि। एहि सूक्ष्म अध्याय-मानचित्रसँ आलोचक पात्रक निर्णय आ घटना-क्रमक विकास देखबैत छथि। विशाल आख्यानपर अनुसन्धान करयवाला पाठक लेल एहन संरचनात्मक अनुक्रम उपयोगी साधन अछि।

परिशिष्टक विस्तार, मुदा, स्वतन्त्र सौन्दर्यात्मक निर्णयक विकल्प नहि। अध्यायक संक्षिप्त रूपरेखा हर कथा-कर्मक औचित्य सिद्ध नहि करैत। विशेषतः तकनीकसम्बन्धी विवरणक पुनरावृत्ति, संकटसँ समाधान धरि गति आ पाठककेँ

देल जानवला अनिश्चितताक परीक्षण अलग आवश्यक अछि। ग्रन्थ एहि आपत्तिक अवसर स्वयं प्रदान करैत अछि।

११. 'The City's Other Face' : रोजगार, स्त्री आ अदृश्य अर्थव्यवस्था

साठि अध्यायपर आधारित 'The City's Other Face'क समीक्षा नैना मिश्राक रोजगार-खोजसँ प्रारम्भ होइत आर्थिक धोखाधड़ी, श्रम, गुमशुदगी, नारी-असुरक्षा, पत्रकारिता आ न्यायिक प्रक्रियाधरि पहुँचैत अछि। कतार, आवेदन, पावती, बदलल नाम आ दस्तावेज केवळ वस्तु नहि; कथा कहबाक व्याकरण बनैत अछि। शहरक 'दोसर चेहरा' नैतिक आरोपसँ अधिक संस्थागत अनुभवक रूपमे उपस्थित होइत अछि।

एतए स्त्रीक सक्रियताकेँ केवल पीड़ाक प्रमाण मानि लेब पर्याप्त नहि। नैना, पूनम आ आन पात्र कखन अपूर्ण सूचना, भय, पारिवारिक ऋण अथवा संस्थागत हिंसामे निर्णय करैत छथि—ई अंतर आलोचनाक वास्तविक क्षेत्र अछि। मूल कथा आ शोध-पाठक बीच प्रमाण-संकेतक अन्तर ग्रन्थ स्वीकार करैत अछि; तथापि कथा-अनुभवक प्रभाव पढ़ैत समय नब अनुसन्धान-सन्दर्भकेँ मूल पात्रक तत्काल ज्ञान मानि लेबाक जोखिमसँ बचबाक चाही।

१२. आख्यानशास्त्रक शब्द : समय, दृष्टिकोण आ दस्तावेज

ग्रन्थक आधुनिक कथा-अध्ययनमे focalisation, polyphony, chronotope, temporal order आ epistemic justice सन पदावली बारम्बार अबैत अछि। एहि शब्दक वास्तविक उपयोग तखने होइत अछि जखन ओ पाठमे कोन जानकारी के, कहिया आ कोना पबैत अछि, एहि प्रश्नक उत्तर देइ। 'The City's Other Face'मे खबर आ जाँचक फराक तथा 'Agnivaṃśa'मे दस्तावेज आ अनुभवक दूरी एहि पद्धतिक ठोस उदाहरण छथि।

जे ठाम संकल्पना केवल प्रस्तावनामे नामरूपेँ उभरैत अछि आ मुख्य विवेचनमे पात्रक कार्यपर नहि लौटैत, ओतए सिद्धान्त अलंकरण बनबाक सम्भावना अछि। समीक्षाक सफलता सैद्धान्तिक नामक संख्यासँ नहि, पाठक नब जटिलता खोलबाक सामर्थ्यसँ जाँचल जाएबाक चाही।

चतुर्थ विभाग : कैलाश कुमार मिश्र : लोकइतिहास सँ स्त्री-अनुभव धरि

१३. ‘Areṛ’ : गामक स्मृति आ इतिहासक प्रमाण

‘Areṛ: A Village's Folk History’क पुनर्पाठमे गाम केवल नक्शाक बिन्दु नहि; कुश्ती-अखाड़ा, विद्यालय, मन्दिर, बजार, जीविका, दान, महिला-श्रम आ विस्थापनक साझा स्मृति बनैत अछि। गामक नामक एकाधिक व्याख्या, व्यक्ति-चरित्रक अतिशयोक्ति आ अलग-अलग वर्षक दाबी समीक्षा-योग्य विषय बनैत अछि। ई लोकइतिहासक प्रेमकेँ तथ्य-परीक्षणसँ अलग नहि करबाक महत्त्वपूर्ण आग्रह अछि।

मुदा मौखिक परम्पराक सत्यता अदालतक दस्तावेज-जकाँ प्रतिपादित नहि कएल जा सकैत, आ लिखित संस्थागत अभिलेख सेहो सामाजिक पक्षधरता सँ मुक्त नहि होइत। एहि दुनू प्रमाणक भेद राखैत आलोचना जँ स्मृतिक सांस्कृतिक अर्थ आ ऐतिहासिक सत्यक सम्भावनाकेँ एक-साथ देखय, तखने गामक ‘अपन इतिहास’ वैचारिक गरिमा पबैत अछि।

१४. ‘Bookmania’ : पुस्तक-प्रेम आ आलोचनाक असहमति

‘Bookmania’क अध्ययन बारह समीक्षात्मक निबन्धकेँ विश्लेषणक विषय बनबैत अछि। कवितामे स्त्रीक आवाज, उपन्यासमे श्रम, संस्कृतिक वर्णनमे जाति, आ ऐतिहासिक दावाक परीक्षण मुख्य विमर्श छथि। समीक्षा एकटा उपयोगी प्रश्न उठबैत अछि : पुस्तकसँ प्रेम करब की ओकर प्रत्येक कथन स्वीकार करब थिक? साहित्यिक निष्ठाक अर्थ असहमत होबाक अधिकारक समाप्ति नहि।

एहि द्विस्तरीय आलोचनामे मूल बारह ग्रन्थक उपलब्धि आ कैलाश कुमार मिश्रक आलोचनात्मक चुनाव दुनूक अध्ययन जरूरी अछि। जखन समीक्षा कथासारक विस्तारमे रमि जाइत अछि, तखन मूल समीक्षकक भाषा, उद्धरणक प्रक्रिया आ चयनक मापदण्ड पर प्रश्न कम पड़ि सकैत अछि। ई संरचनात्मक असन्तुलन पाठककेँ अलग सँ देखबाक चाही।

१५. ‘Manasarabī’ : बुलकीक श्रम आ न्याय-अन्यायक सीमा

‘Manasarabī’क समीक्षामे बुलकीक श्रम, सामन्ती ऋण, जातिगत निर्भरता आ प्रेमक सामाजिक मूल्य समान रूपेँ विचाराधीन अछि। आङन, बाँसक टाटी, पायल, परिवारक ऋण-खाता आ स्त्रीक निर्णयक छोट-छोट दृश्य एहन वस्तु छथि जे समष्टिगत अन्यायकेँ दृश्यात्मक बनबैत अछि। मुख्य प्रश्न ई नहि जे दुःखक बदला कुन पात्रकेँ दण्ड भेटल; प्रश्न ई जे ककर जीवनमे न्याय अबैते नहि।

आलोचनामे महिला पात्रक गरिमा स्पष्ट चिन्हल गेल अछि; तथापि प्रेमक कथा आ स्त्रीक स्वतन्त्र आकांक्षाक बीच अन्तर बनाए राखब जरूरी अछि। ‘बलिदान’क प्रशंसा करैत-करैत स्त्रीक अस्वीकार आ आत्मनिर्णय अदृश्य नहि भऽ जाए—एहि परीक्षणसँ ग्रन्थक नारी-केन्द्रित निष्कर्ष अधिक न्यायसंगत बनत।

१६. यात्रा, लोकगीत, चित्रकला आ स्त्रीक ज्ञान

कैलाश कुमार मिश्रक यात्रा-गद्य आ लोकसांस्कृतिक निबन्धसभक अध्ययनमे मिथिला चित्रकला, साँझी, मधुश्रावणीक अनुष्ठान, गीतक दोहरा अर्थ, स्थानीय स्मृति आ पूर्वोत्तरक समुदायसभक अनुभवक चर्चा अछि। ई संग्रह लोकसंस्कृतिमे स्त्रीक सृजन, मौखिक बुद्धि आ दृश्यरचनाकेँ इतिहासक स्रोत मानबाक आग्रह करैत अछि। यात्रा-विवरणकेँ केवल दूरी आ स्थानक लेखा नहि, भेट-घाट आ भाषिक सम्बन्धक रचना मानल गेल अछि।

तथापि ‘लोक’क सामूहिक नामभित्र अनेक जाति, वर्ग आ लिङ्गक असमान पहुँच अछि। रचनाकार जे दृश्य देखैत छथि ओकर सामाजिक स्थिति, देखबाक सीमा आ अनुपस्थित आवाजक जाँच स्वतंत्र होबाक चाही। विदेशी अथवा दूरस्थ समुदायपर निर्भर कथनक पुष्टि लेल स्थानीय भाषिक स्रोत आ सहभागी कथन उपयोगी होएत।

पंचम विभाग : राजदेव मण्डल : नदी, जाति, श्रम आ दृश्यरचना

१७. ‘Ambarā’ आ ‘Vasundharā’ : लोकजीवनक असुविधाजनक सत्य

राजदेव मण्डलक ‘Ambarā’क पाठ कोसीक बाढ़ि, जातिक अपमान, श्रम आ पर्यावरणक क्षतिमे कविता खोजैत अछि। ‘Vasundharā’मे धरती आ स्त्रीदेहक रूपक करुणाक संग संघर्ष सेहो रचैत अछि। एतए प्रकृति केवल हरियर दृश्य नहि; बाढ़ि, अभाव आ प्रशासनिक असमानताक अनुभव अछि। ‘लोक’ शब्दकेँ केवल उत्सवक सौन्दर्य बनाबयवला प्रवृत्तिक प्रतिपक्ष एही ठाम जन्म लैत अछि।

तथापि नदीक बिम्ब आ आपदाक समाजशास्त्रकेँ एकहि साहित्यिक निष्कर्ष नहि मानल जा सकैत। कविता कखन प्रत्यक्ष दृश्य, कखन लोकस्मृति, कखन राजनीतिक प्रस्ताव करैत अछि—ओहि भेदसँ ओकर शिल्प जाँचबाक चाही। सामाजिक क्रोध स्वतः सफल रूपक नहि, मुदा सफल रूपक आलोचनात्मक क्रोधकेँ स्थायी पाठकीय अनुभव बना सकैत अछि।

१८. ‘Hamar Ṭol’ आ ‘Jal Bhaṃvar’ : बस्ती, पंचायत आ पानी

‘Hamar Ṭol’क आकलन बस्तीकेँ सामाजिक देहक रूपमे पढ़ैत अछि; ‘Jal Bhaṃvar’मे जल, गाँवक परिषद्, धन आ प्रेमक सम्बन्ध कथाक घटनाक कारण-शृंखलामे प्रवेश करैत अछि। ‘Jal Bhaṃvar’क अध्ययन उपलब्ध संस्करणक बाइस खण्डकेँ आधार बनबैत अछि। नायक-नायिकाक सम्बन्धक बाहर सामुदायिक ‘न्याय’क भाषा आ ओकर असमान अधिकार देखब महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक कदम अछि।

पर्यावरणक जल-चक्र आ जाति-सम्बन्धक सामाजिक जालक तुलना सुन्दर होइतहुँ जँ प्रत्येक जटिलताकेँ ‘भँवर’ कहि देल जाए तखन बिम्बक अर्थ ढीला पड़ि सकैत अछि। समीक्षाक कसौटी ई होबाक चाही जे नदी वा पानी कोन निर्णायक क्षणमे पात्रक विकल्प बदलैत अछि, केवल वातावरणक आभास नहि दैत।

१९. ‘Jāl’ आ ‘Pañcaitī’ : पटकथाक दृश्यगत न्याय

‘Jāl’मे ऋण, सम्पत्ति, जाति आ स्त्रीक स्वायत्तता प्रेमक कथाकेँ जकड़ैत अछि। ‘Pañcaitī’क नौ दृश्य अन्तरजातीय विवाहक प्रसंगसँ न्याय, पंचायतक अधिकार आ स्त्रीक निर्णयक केन्द्र खोलैत अछि। एहिमे नाटकीय घटना आ सामाजिक निषेधक सम्बन्ध लिखित कथनक अपेक्षा दृश्य, प्रवेश, मौन आ प्रतिवचनसँ अधिक स्पष्ट होइ सकैत अछि।

आलोचक एहन रचनाकेँ समाजसुधारक कथासार मानि छोड़ि नहि सकैत। स्क्रीनप्ले लेल दृश्य-स्थान, क्रियाक सम्भाव्यता, पात्रक दृष्टि, समय-संयम आ दृश्यान्तरक परीक्षण अनिवार्य अछि। पंचायतक निर्णय अन्यायी देखाओल गेल —एहि कथनसँ रचनाक सिनेमाई उपलब्धि सिद्ध नहि होइत; स्त्री पात्रकेँ दृश्यक केन्द्र भेटल कि नहि, ई प्रश्न अलग अछि।

२०. ‘Lāj’, ‘Vāpasī’ आ घरक नैतिक प्रतिष्ठा

‘Lāj’क आलोचनामे महिला-शिक्षा, वर्गीय प्रतिष्ठा आ नैतिक स्वीकृतिक प्रश्न अछि; ‘Vāpasī’क दू एकांकी ‘Vāpasī’ आ ‘Sambandh’मे दहेज, वंशक पहचान, उत्तराधिकार आ अविश्वासक टकराव केन्द्रमे अछि। छोट नाटकीय आकारमे सार्वजनिक प्रतिष्ठाक दाबी आ घरक भीतरक हिंसा एक-दोसराकेँ काटैत अछि। एहि रचनासभमे नाम, घर आ प्रतिष्ठा अनेकार्थक सामाजिक प्रतीक बनैत अछि।

परिवार-केन्द्रित आलोचनाक एक खतरा ई अछि जे चरित्रक अंतिम आत्मबोधकेँ समाजक सम्पूर्ण परिवर्तन मानि लेल जाए। समेटल कथा जँ किछु व्यक्तिक नैतिक सुधारपर समाप्त होइत अछि, तखनो ऋण, जाति-नियम आ सम्पत्तिक व्यवस्था शेष रहि सकैत अछि। एहि शेष प्रश्नक उल्लेख आलोचनात्मक निष्पक्षता बढ़बैत अछि।

२१. ‘The Colours of Triveṇī’ आ सामूहिक जीवनक रूप

‘The Colours of Triveṇī’क अध्ययन घर, वर्ग आ भयक परस्पर गुन्थनपर केन्द्रित अछि। एक लेखकक अनेक विधागत प्रयोग—कविता, उपन्यास,

पटकथा, एकांकी—एकहि सङ्ग संकलित होयबाक लाभ ई अछि जे सामाजिक प्रश्नक भाषा रूप बदलैत कतेक नब अर्थ पबैत अछि, से देखल जा सकैत अछि। राजदेव मण्डलक पाठसमूह एहि तुलनाक अवसर दैत अछि।

मुदा प्रत्येक कृति 'प्रतिरोध' शब्दक अन्तर्गत समाहित भऽ जाए तँ काव्यगत अन्तर कम दृष्टिगोचर होयत। कविता लेल ध्वनि-बिम्ब, उपन्यास लेल कथ्यक कालक्रम, पटकथा लेल दृश्यसंयोजन आ एकांकी लेल संघर्ष-संकेन्द्रण अलग उपकरण माँगैत अछि। ग्रन्थक मूल्य ओहि क्षणमे बढ़ैत अछि जतए ई साधन अलग-अलग अपन रूपमे जाँचल जाइत अछि।

षष्ठ विभाग : कविता, अनुवाद, एकांकी आ सामाजिक हस्तक्षेप

२२. शिव कुमार प्रसाद : **'Manak Hāṭ'** सँ **'Rāga–Virāga'** धरि

शिव कुमार प्रसादक 'Manak Hāṭ', 'Soṃhāt–Ansoṃhāt' आ 'Rāga–Virāga'क अध्ययनमे अनुभव, लोकस्मृति, भाषा-चेतना आ सामूहिक नैतिकता पुनः-पुनः अबैत अछि। कविता एहि ठाम विचारक घोषणापत्र नहि, सम्बोधन, लय, स्मृति आ विरुद्ध अर्थक आवाज बनि सकैत अछि। पाठक लेल महत्त्वपूर्ण ई अछि जे कविक भाषिक समुदायसँ लगाव कखन बिम्बक भीतर जीवन्त होइत अछि आ कखन प्रत्यक्ष वक्तव्य बनि रहि जाइत अछि।

कविताक समीक्षा जँ सामाजिक आशयक सूची बनि जाए तँ पंक्तिक वाक्य-विन्यास, ठहराव आ स्वर-संवाद ओझरा जाइत अछि। ग्रन्थक सम्बन्धित खण्डमे एहन सूक्ष्म भाषिक विश्लेषण जतेक बढ़त, 'लोक-चेतना'क आवर्ती पद ओतबे विशिष्ट अर्थ ग्रहण करत।

२३. **'Paghalait Himkhanḍ'** आ द्विभाषिक पाठक समस्या

'Paghalait Himkhanḍ'क अध्ययन हिन्दी–मैथिली कविता-अनुवाद आ स्त्री-अनुभवक सम्बन्ध उठबैत अछि; 'Kṣitij'मे द्विभाषी रचना, कथा आ जन-जीवनक आदर्शक प्रश्न अछि। एहन अध्ययनमे मूल काव्य-पंक्ति, अनूदित ध्वनि, सम्बोधनक लिङ्ग तथा सामाजिक रजिस्टरक तुलना अनिवार्य होइत अछि।

अनुवादक सफलता कथ्य पहुँचाबयमे मात्र नहि, बहुअर्थी भाषा बचेबाक कौशलमे सेहो निहित अछि।

अनुवाद आ मूल रचना दुनूकेँ एकहि ‘सन्देश’क प्रतिलिपि मानि लेब गलत होएत। एक भाषाक बिम्ब दोसर भाषामे अलग इतिहास आ अनुभूति जगा सकैत अछि। यसम्बन्धी तुलनात्मक अनुच्छेदक साथ ठोस समानान्तर पंक्तिसभ जोड़ब भविष्यक आलोचनाकेँ अधिक जाँचयोग्य बनाओत।

२४. रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झाड़ूदार’ : झाड़ूक रूपक

‘Gītāñjali Jhāṛū’ आ ‘Hamrā Binu Jagat Sunnā Chai’क अध्ययन सफाइ, श्रम आ लोकभाषाक सामाजिक मूल्य उठबैत अछि। ‘झाड़ू’ एक वस्तु रहितहुँ जातिगत श्रम-विभाजन, सार्वजनिक अस्वच्छता आ आत्मसम्मानक बहुस्तरीय रूपक बनि सकैत अछि। कविक नाममे उपस्थित ‘झाड़ूदार’क प्रयोगकेँ काव्यगत आत्मस्थिति आ सामाजिक प्रतिप्रश्न दुनूक रूपमे पढ़बाक अवसर अछि।

एहि रूपकक नैतिक शक्ति निस्सन्देह अछि; तथापि ‘सफाइ’क नारा आ कविता-रूपकक बीच अन्तर जरूरी अछि। श्रमक गरिमा पर कविता तखन बेसी प्रभावी होइत अछि जखन कर्ताक देह, समय, अपमान आ आवाजक विशिष्टता देखाओल जाए, केवल आदर्शतापूर्ण प्रशंसा नहि।

२५. आनन्द कुमार झा : दहेज, घर आ नाटकीय विसंगति

आनन्द कुमार झाक सम्बन्धित अध्ययनसभ ‘Ṭākāk Mol’, ‘Kalah’, चरित्र-हनन, ‘Dhadhāit Navakī Kaniyāk Lahās’, ‘Haṭhāt Parivartan’ आ ‘Mukti Yātrā’ सन रचनामे आर्थिक असुरक्षा, पारिवारिक नियंत्रण, स्त्रीक अस्तित्व आ संस्थागत ताकत देखैत अछि। एहि विविध नाट्यमे दहेज एकरूप नैतिक दोष नहि; ओकर सम्बन्ध रोजगार, प्रतिष्ठा, सन्तानक निर्णय आ सामाजिक श्रेणीकरणसँ बनैत अछि।

कोनो नाटकक शीर्षक झकझोरयवला भऽ सकैत अछि, मुदा दृश्यगत क्रूरता स्वयं कलात्मक सफलता नहि। पात्रक भयक कारण-क्रम, चरित्रक बदलावक विश्वसनीयता, स्त्रीक संवाद आ अन्तक औचित्यकेँ सामाजिक विचारसँ स्वतंत्र रूपेँ जाँचब जरूरी अछि। ग्रन्थ एहन अवसर बारम्बार खोलैत अछि।

२६. कुसंगति, करुणा आ सम्पादकीय शब्दावली

किछु अध्ययनक शीर्षकमे एकरूप आलोचनात्मक शब्द—'social justice', 'women's identity', 'resistance', 'evidence'—बारम्बार उपस्थित अछि। एहिसँ संकलनक नैतिक केन्द्र स्पष्ट होइत अछि; मुदा अल्प भिन्न रचनासभ एके प्रकारक आलोचनात्मक साँचँमे बन्हायल प्रतीत भऽ सकैत अछि। घरक भोजन-वितरण, ड्योढ़ीक बातचीत, सामन्ती कृपा आ श्रमिक अधिकारक कथा एक-दोसरासँ बेशक जुड़ल अछि, तैयो हुनकर कथन-रूप अलग अछि।

आलोचनामे स्थिर सिद्धान्त आ रचनाक निजी अटपटापनक बीच सन्तुलन चाही। गामक एक टुकड़ा रोटी, कोनो चिट्ठी, खराब नामपट्ट अथवा अव्यक्त मौन जब दृश्य रचैत अछि, तखन उ वस्तु 'शोषण'क सामान्य उदाहरणसँ अधिक बारीक अर्थ दैत अछि। समीक्षककेँ ओहि भिन्नता सुरक्षित रखबाक चाही।

सप्तम विभाग : लल्लन प्रसाद ठाकुर, प्रभास कुमार चौधरी आ 'BHARAT 2027'

२७. लल्लन प्रसाद ठाकुरक अध्ययन : पूर्ववर्ती खण्डसँ सम्बन्ध

एहि विशाल पुस्तकमे लल्लन प्रसाद ठाकुरक चारि मैथिली नाटक, चारि एकांकी, तीन गीतिनाटिका, तेरह गीत-लोरी आ हिन्दी रचनाक पृथक आलोचना भेटैत अछि। 'बड़का साहेब', 'लौंगिया मिरचाइ', 'बकलेल', 'आदि वा अन्त', 'चन्दा', 'ग्रीन रूम', 'सूटकेस' आ 'मैथिली फिल्म'क विश्लेषण 'समग्रक सम्पादकीय'क खण्ड-८९मे विस्तृत रूपँ जाँचल गेल अछि। एतए पुनरुक्ति नहि, ओहि अध्ययनसभक व्यापक साहित्येतिहासात्मक स्थितिपर ध्यान देल जा रहल अछि।

नाटकक पद-प्रतिष्ठा, बेरोजगारी, दहेज आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक प्रश्न जखन एहि टोमक आन लेखनसँ सँग पढ़ल जाइत अछि, तखन लल्लन प्रसाद ठाकुरक रंगव्यंग्यक सम्बन्ध आधुनिक मैथिली गद्यक संस्थागत आलोचनासँ खुलैत अछि। मुदा गीत-लोरीक भावनात्मक यथार्थकेँ नाटकक नैतिक तर्कक

अन्तर्गत पूरा समेटब उचित नहि। एतए विधाक अलग आलोचनात्मक कसौटीक माँग अछि।

२८. गीत-लोरी आ हिन्दी लेखन : भाषिक विस्तारण

‘Saṅkalp Liya’मे भाषिक अधिकारक सामूहिक गीत, ‘Chhuk Chhuk’मे बालदृष्टि, ‘Lālmuniyā’मे ऋतु आ श्रम, ‘He Re Chandā’मे विरह, आ ‘Haiyā Re’मे नदी-यात्रा अलग स्वर बनैत अछि। गीतमे ‘हम’ आ ‘तोरा’क सम्बन्ध नाटकक सार्वजनिक संवादसँ भिन्न अछि। ‘Sūnī Saṛak’क सड़क, ‘Ḍam Ḍam Ḍigā Ḍigā’क बेरोजगारी आ ‘Sahyog’क औद्योगिक परिवेश हिन्दी रचनासभक अलग राजनीतिक-अनुभव जगत अछि।

एहि चयनसँ साहित्यिक इतिहासक एक भाषा-रेखा दू भाषिक रचनाक आवागमनकेँ ठाम देबाक सामर्थ्य देखबैत अछि। मैथिली लेखकक हिन्दी रचनाकेँ न तऽ बहिष्कृत करब चाही, न ओकरा मूल मैथिली रचनाक भाषिक भिन्नतासँ विमुक्त। पाठककेँ एहि दू साहित्यिक सार्वजनिकताक आपसी सम्बन्ध पर स्पष्ट दिशा भेटबाक चाही।

२९. प्रभास कुमार चौधरी : व्यक्तित्व आ सामाजिक यथार्थ

‘Abhiśapta’, ‘Yugpuruṣ’, ‘Hamrā Lag Rahab?’ आ ‘Navārambha’क अध्ययनमे शिक्षित वर्गक आत्मविरोध, गलत महिमामण्डन, सामन्ती अवशेष, स्त्रीक विकल्प आ दलित चेतनाक भिन्न प्रसंग उपस्थित अछि। ‘Rājā Pokharime Katek Machharī?’मे लोककथा, प्रतिरोध आ पराजयक जटिल सम्बन्ध देखाओल गेल अछि। एक लेखकक अनेक उपन्यासक समूह-वाचनसँ व्यक्तिक नैतिक विफलता आ संस्था-संरचनाक स्थायित्वक फराक खुलैत अछि।

मुदा एहि समूहक किछु अध्ययन स्पष्ट करैत अछि जे मूल उपन्यासक सम्पूर्ण पाठ प्रत्यक्ष उपलब्ध नहि छल आ विश्लेषण प्रकाशित समीक्षासभपर आधारित अछि। एहन ठाम पात्रक नब संवाद अथवा अनदेखल घटनाक निश्चित व्याख्या नहि देबाक सावधानी अपनाओल गेल अछि। ई स्पष्टता ग्रन्थक विश्वसनीयताक पक्षमे अछि; तथापि एहन द्वितीयक आधारवला निष्कर्षकेँ प्रत्यक्ष पाठाधारित निष्कर्षक बराबर प्रमाणिक दर्जा देबाक नहि चाही।

३०. ‘Didval’ आ ‘Kathā-Prabhās’ : कथाक काल आ प्रतिनिधित्व

प्रभास कुमार चौधरीक कथा-संग्रह ‘Didval’ आ ‘Kathā-Prabhās’क अध्ययनमे गामक सत्ता, नगरक एकाकीपन, संस्थागत संवेदनहीनता, स्मृति आ समाजक रूपान्तरण पर ध्यान अछि। तीन दशकक कथा-चयनक पाछाँ कथाकारक बदलैत अनुभवक क्रम बनैत अछि। एहि रूपमे ‘प्रतिनिधि’ शब्द साहित्यिक परम्पराक सम्पूर्ण निष्पक्ष नमूना नहि, एक चयनित सृजनात्मक आत्म-इतिहासक संकेत अछि।

आलोचक यदि कथा-संग्रहक काल-चिह्नकेँ लेखकक शैलीक विकासक स्थिर रेखा मानि लेथि तँ विरोधी स्वर ओझरा सकैत अछि। रचनाक प्रकाशन-वर्ष, लिखबाक अनुमानित समय आ कथाकारक पुनःसम्पादन अलग-अलग होइ सकैत अछि। भाषा, कथावाचक आ अन्तक प्रकृतिक तुलनात्मक अध्ययन एहि समूहकेँ मजबूत बनबैत अछि।

३१. ‘BHARAT 2027’ : सत्ताइस वर्ष, पाँच खण्ड आ न्याय-अनुभव

‘BHARAT 2027’क अध्ययने पाँच खण्डमे फैलल सत्ताइस वर्षक न्याय, दस्तावेज, नागरिकता, सार्वजनिक सूचना आ डिजिटल व्यवस्थाक प्रसंगकेँ आख्यानशास्त्रीय दृष्टिसँ पढ़ल गेल अछि। जे देखल गेल, जे सुनल गेल, आ जे अबहुँ अज्ञात अछि—एहि तीन अवस्थाकेँ अलग रखबाक आग्रह कथाक प्रमुख बौद्धिक सूत्र बनैत अछि। दस्तावेज, सील, पुरान पावती, अदालतक बरामदा आ पारिवारिक प्रतीक्षा समयक पदार्थ बनैत अछि।

एहि अध्ययनमे अनेक वास्तविक विधिक-समसामयिक सन्दर्भ उद्धृत अछि। मुदा कल्पित पात्रक अनुभव, उपन्यासमे प्रस्तुत विधिक विमर्श आ स्वतन्त्र कानूनी तथ्यक दर्जा अलग राखब अत्यावश्यक अछि। सन्दर्भक अद्यतनता, तारिख आ नियमक प्रभावशीलता जाँचबाक अधिकार भविष्यक सम्पादकक जिम्मेदारी अछि; कथा-सत्य केवळ दस्तावेजक अत्यधिक संख्यासँ सिद्ध नहि होइत।

३२. आख्यानक गति आ विधिक विवेचनक विस्तार

‘BHARAT 2027’क समेकित आलोचनामे एक आपत्ति स्वयं स्पष्ट भेटैत अछि : अधिक कानून-सम्बन्धी व्याख्या पात्रक संवादकेँ कखनो सुव्यवस्थित भाषण बना दैत अछि। एहन परिस्थिति ‘Agnivaṃśa’क तकनीकी विवेचनसँ तुलनीय अछि। दुनू ठाम तथ्यक विचारशीलता कथा-गतिशीलता लेल आवश्यक सेहो अछि आ सम्भावित बाधा सेहो।

उपन्यास सामाजिक शिक्षाक माध्यम होइ सकैत अछि, मुदा साहित्यिक कला अनिश्चितता, खण्डित ज्ञान आ अपूर्ण मनुष्यक आवाजसँ बनैत अछि। जब प्रत्येक पात्र सटीक विशेषज्ञ-जकाँ बजैत अछि तँ साहित्यक संघर्ष व्याख्यानमे परिणत होबाक सम्भावना अछि। एहन आत्म-आलोचनात्मक टिप्पणी ग्रन्थक एक महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय शक्ति अछि।

अष्टम विभाग : समेकित आलोचना, सम्पादकीय सीमा आ निर्णय

३३. विषयक साझा धरातल : नदी, अभिलेख, श्रम आ न्याय

एहि टोमक प्राचीन प्रहसनमे न्यायाधीशक स्वार्थ, आधुनिक गाँवक गीतमे बाढ़िक पीड़ा, नगर-उपन्यासमे रोजगारक कतार आ भविष्यमुखी आख्यानमे तकनीकक प्रतिवेदन—सभमे किछु साझा प्रश्न उभरैत अछि : के सुनल जाइत अछि, के निर्णय करैत अछि, आ ककर बात प्रमाण मानल जाइत अछि। नदी, नामपट्ट, झाड़ू, पावती, चिट्ठी आ पुरान रजिस्टर सभ अलग रचनामे सत्ता-सम्बन्धक भौतिक संकेत बनैत अछि।

ई साझा धरातल ‘समानान्तर इतिहास’क सम्भावित सिद्धान्त अछि, मुदा एकरा रचनासभक समस्त अर्थक स्थानापन्न नहि बनाओल जा सकैत। प्रहसनक हँसी, लोकगीतक स्वर, कथा-समयक फाँक आ नाटकक मंचीय क्रिया अपन स्वतंत्र जीवन रखैत अछि। इतिहासक आलोचनाकेँ एकता खोजैत विविधता नष्ट नहि करबाक चाही।

३४. सामाजिक न्याय आ सौन्दर्यात्मक न्याय

अनेक अध्ययन रचनाक स्त्री-पात्र, दलित अनुभव, श्रमिक समुदाय अथवा भाषिक अधिकारक पक्षधरता चिन्हैत अछि। ई आवश्यक आलोचनात्मक बोध अछि, विशेषतः ओहि साहित्येतिहासमे जतए 'लोक'क नाम पर अनेक जनक व्यक्तित्व मौन कएल गेल। मुदा कोनो रचना जे बात कहैत अछि, ओ बात कोना कहैत अछि, से प्रश्न स्वतन्त्र अछि। पात्रक घोषणापत्र ओकर कलात्मक प्रामाणिकता नहि; नाटकीय असफलता ओकर सामाजिक आग्रहकेँ निरस्त सेहो नहि करैत।

सम्पादकीय न्यायक अर्थ प्रशंसा आ निन्दाक माप बराबर राखब नहि, प्रमाणक अनुपातमे निर्णय देब थिक। बहुधा त्रासद कृति पाठककेँ स्पष्ट 'समाधान' नहि दैत; ओ पाठकक नैतिक धैर्यक परीक्षा करैत अछि। एहि अनुभवकेँ आलोचनाक केन्द्रमे रखबाक चाही।

३५. इतिहासक बनावट : केन्द्र-बाह्य आवाजक सँग स्रोत-नीति

ग्रन्थक एक उपलब्धि ई अछि जे साम्प्रतिक साहित्य-संस्थाक बाहरो महत्त्वपूर्ण लेखन परिश्रमपूर्वक संकलित आ विवेचित अछि। लोकइतिहास, गीत, पटकथा, अनुवाद, गामक स्मृति आ ऐतिहासिक रंगमंच, सब एक साझा सार्वजनिक साहित्यिक क्षेत्रक सदस्य बनैत छथि। एहन विस्तार मैथिली साहित्यकेँ एक विधाक इतिहास मानबाक संकीर्णता तोड़ैत अछि।

एकर सीमा तखन स्पष्ट होइत अछि जखन स्रोत-आधार खण्ड-खण्डमे असमान अछि। किछु विश्लेषण प्रत्यक्ष मूल पाठपर, किछु प्रकाशित टिप्पणीपर, किछु उपलब्ध रूपान्तरणपर आधारित अछि। एहि भेदकेँ कार्यकारी सारणी अथवा प्रमाण-सूचीमे दर्शाओल जाए तँ ग्रन्थक वैकल्पिक इतिहास अधिक विश्वसनीय होयत।

३६. अङ्ग्रेजी अनुवादक विशेष उत्तरदायित्व

मूल मैथिली आलोचनाक लेखक-स्वयंक अंग्रेजी रूपान्तर ई साहित्यिक सामग्रीकेँ व्यापक पाठकवर्ग धरि लऽ जाइत अछि। ई महत्त्वपूर्ण कार्य थिक, कारण

स्थानीय शब्द, जाति-सूचक संस्थागत प्रथा, लोकधुन आ मिथिलाक सांस्कृतिक भूगोलक अर्थ भाषिक सीमा पार करैत अछि। 'gām', 'tol', 'pañcaitī' अथवा 'lāj' सन पद केवल शब्दकोशीय समतुल्यता नहि, सामाजिक सन्दर्भक सहयोग चाहैत अछि।

एकहि ग्रन्थमे वैदिक/संस्कृतनिष्ठ नाम, लोकपद आ आधुनिक विधिक अंग्रेजीक उपस्थिति अनुवादक लेल कठिन चुनौती अछि। मानकीकृत लिप्यन्तरण, लघु शब्दावली, मूल शीर्षकक सुसंगत सूची आ मूल-अंग्रेजी पदक परस्पर अनुक्रमणी भावी संस्करणक उपयोगिताकेँ बढाओत। एहन परिशिष्ट अनुवादक रचनात्मक स्वाधीनताकेँ घटबैत नहि, पाठकीय जाँच सुगम करैत अछि।

३७. पुनरावृत्ति, शब्दावली आ सम्पादनक कार्य

प्रत्येक स्वतंत्र अध्ययनमे 'भूमिका', 'पद्धति', 'स्रोतक सीमा', 'आलोचनात्मक निर्णय' आ 'भविष्यक अनुसन्धान'क चर्चा अकसर दोहराएल अछि। स्वतंत्र निबन्ध लेल ई स्वाभाविक अछि; मुदा एके विशाल टोममे पढ़ैत समय शैलीगत पुनरावृत्ति थकान उत्पन्न करैत अछि। एकटा आरम्भिक साझा पद्धति-विवरण आ अध्ययन-विशेषक अपवाद-सूची तैयार कएल जाए तँ विस्तृत विवेचन अधिक सघन भऽ सकैत अछि।

नामक वर्तनी, लेखक-समूहक प्रस्तुति, शीर्षकसभक अनुवाद, पुस्तक-वर्ष आ स्रोत-सङ्केत पर अभिन्न सम्पादकीय नीति उपयोगी होएत। एहि सुधारणक आवश्यकता सामग्रीक साहित्यिक महत्त्वकेँ नकारैत नहि; उलटे एतबा विशाल सन्दर्भ-ग्रन्थक दीर्घकालिक उपयोगक शर्त बनैत अछि।

३८. मूल दस्तावेजक २०२७ प्रकाशन-विवरण आ वर्तमान सत्यापन

उपलब्ध फाइलक प्रारम्भिक प्रकाशन-पृष्ठपर 'First edition: 2027' आ '© 2027 Gajendra Thakur / Preeti Thakur' लिखल अछि। एहि समीक्षामे एकरा दस्तावेजक स्वप्रस्तुत प्रकाशन-विवरणक रूपमे ग्रहण कएल गेल अछि; ई स्वतन्त्र प्रकाशन-अभिलेखक सत्यापन नहि थिक। समान रूपसँ पुस्तकमे उद्धृत

समसामयिक विधि, अध्ययन, न्यायिक अथवा प्रशासनिक दस्तावेज पर ताजा सत्यापनक आवश्यकता भऽ सकैत अछि।

इतिहास-ग्रन्थक पाठक लेल ई भेद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि : 'लेखकक स्रोतमे लिखल अछि' आ 'इएह अन्तिम ऐतिहासिक सत्य अछि' एक बात नहि। एहन मर्यादा-बोध ग्रन्थक शोध-प्रतिष्ठा बढ़बैत अछि, कम नहि करैत।

३९. समेकित उपलब्धि आ पर्याप्त आलोचनात्मक आरक्षण

समेकित रूपमे एहि टोमक उपलब्धि चारि स्तर पर अछि : उपेक्षित अथवा बिखरल साहित्यक विस्तृत उपस्थिति; काव्य, नाटक, कथा आ लोकज्ञानक भिन्न विधाक तुलनात्मक प्रस्ताव; प्रमाणक सीमा स्वीकार करबाक चेष्टा; आ पाठक सामाजिक अन्यायक संग रूप, लय, दृश्य आ कथावाचकक परीक्षणक आग्रह। 'Dhūrtasamāgama'क मंचीय व्यंग्यसँ 'BHARAT 2027'क दीर्घ न्याय-यात्रा धरि फैलल ई यात्रा मैथिली आलोचनाक विषयक्षेत्रकेँ विस्तृत करैत अछि।

तथापि विस्तार स्वयं अंतिम सफलता नहि। सैद्धान्तिक शब्दक पुनरावृत्ति, विशाल सामग्रीमे अनुपातक असन्तुलन, अनूदित उद्धरणक सत्यापन, किछु मूल पाठक अप्रत्यक्ष आधार आ अति-विवेचनात्मक गद्य—ई सभ वास्तविक सम्पादकीय प्रश्न छथि। एतए सुधारक सुझाव विदेहक समानान्तर इतिहास-प्रयासकेँ नकारबाक लेल नहि, ओकरा अधिक जाँचयोग्य आ टिकाऊ बनायबाक लेल अछि।

४०. अन्तिम सम्पादकीय निर्णय : समानान्तरताक अर्थ प्रश्न करबाक अधिकार

'A Parallel History of Mithilā & Maithilī Literature', Part IV · Tome XI, एकटा विस्तृत आलोचनात्मक साहित्यिक अभिलेखक रूपमे महत्त्वपूर्ण अछि। एकर सबसँ बड़का योगदान कोनो एक लेखकक श्रेष्ठता घोषित करब नहि, ओहि ग्रन्थसभपर व्यवस्थित प्रश्नक अधिकार खोलब अछि जे सामान्य साहित्येतिहासमे कम सुनल जाइत छथि। नाटचगीत, गामक स्मृति, श्रमिकक भाषा, स्त्रीक प्रतिवचन आ दस्तावेजक अविश्वसनीयता—ई सभ इतिहासक विचारक केन्द्र बनैत अछि।

अन्ततः 'समानान्तर' तखन सार्थक होइत अछि जखन आलोचना स्वयं अपन प्रिय तर्ककेँ सेहो प्रमाणक कसौटीपर राखय। इतिहासक नब दरवाजा केवल नब नाम जोड़लासँ नहि, वस्तुकेँ पढ़बाक नब जिम्मेदारीसँ खुलैत अछि। एहि दायित्वक दृष्टिसँ प्रस्तुत टोमक उपलब्धि पर्याप्त, ओकर सीमा दृश्य, आ ओकर अगिला संस्करणक सम्भावना प्रखर अछि।

सन्दर्भ-विवरण

१. गजेन्द्र ठाकुर, A Parallel History of Mithilā & Maithilī Literature, Part IV · Tome XI; with Critical Appreciations of Representative Maithili Writers; उपलब्ध अंग्रेजी DOCX, लेखक-स्वयं अनुवाद, प्रकाशन-पृष्ठपर संस्करण-वर्ष २०२७ अंकित।

२. उपर्युक्त ग्रन्थक 'Dhūrtasamāgama', 'Prabhāvatīharaṇa', तुलनात्मक नाटच-अध्ययन, 'Agnivaṃśa', 'The City's Other Face', कैलाश कुमार मिश्र, राजदेव मण्डल, शिव कुमार प्रसाद, रामदेव प्रसाद मण्डल 'झाड़ूदार', आनन्द कुमार झा, लल्लन प्रसाद ठाकुर, प्रभास कुमार चौधरी आ 'BHARAT 2027' सम्बन्धी अध्ययन।

३. 'गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय', खण्ड-८९ : 'नित नवल लल्लन प्रसाद ठाकुर' पर सम्पादकीय समीक्षा—आशीष अनचिन्हार; प्रस्तुत खण्डमे पुनरावृत्ति टारबाक लेल पूर्ववर्ती सम्बन्धक उल्लेख।

स्रोत-सीमा : एहि पुनर्पाठमे समीक्षाधीन अंग्रेजी टोमक उपलब्ध पाठ मुख्य स्रोत अछि। ग्रन्थभित्र उल्लिखित प्रत्येक बाह्य स्रोतक स्वतन्त्र पुनर्सत्यापन वा मूल मैथिली-अंग्रेजी पंक्तिक सम्पूर्ण समतुलन-जाँच एहि समीक्षा अन्तर्गत सम्पन्न नहि कएल गेल अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड–९०

एहि खण्डमे ‘मिथिला आ मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास’क भाग–४, टोम ११ क समेकित आलोचनात्मक पुनर्पाठ प्रस्तुत अछि। प्राचीन नाट्यपरम्परासँ आधुनिक कविता, उपन्यास, पटकथा, लोकइतिहास आ सामाजिक आख्यान धरि ग्रन्थक विस्तृत परिधि जाँचल गेल अछि।

‘धूर्तसमागम’ आ ‘प्रभावतीहरण’क रंगशास्त्र, ‘अग्निवंश’क प्रमाण-विवेक, कैलाश कुमार मिश्रक लोकस्मृति, राजदेव मण्डलक जल-समाज, आनन्द कुमार झाक नाटक, प्रभास कुमार चौधरीक कथा आ ‘भारत २०२७’क न्याय-अनुभव एहि समीक्षाक प्रमुख केन्द्र छथि।

साहित्यिक उपलब्धिक संग आलोचनाक सीमा सेहो स्पष्ट कएल गेल अछि : मूल पाठ आ अनुवादक अन्तर, प्रत्यक्ष आ द्वितीयक प्रमाणक भेद, स्त्रीक निर्णयाधिकार, जाति-श्रमक अनुभव, कथा-गति आ सम्पादकीय पुनरावृत्तिक परीक्षण। उद्देश्य प्रशस्ति नहि, विवेकपूर्ण साहित्यिक मूल्यांकन अछि।

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

मूल पाठ | विस्तृत आलोचना | सम्पादकीय निर्णय

विदेह

विदेह डिजिटल संग्रह

सर्वाधिकार २०२७ : गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर